



প্রতিভা বন্দুর

# মানবীর জয়ী

পরিষেক.  
আবাহ্য ফিল্ম কর্পোরেশন





## ମାଧ୍ୟମିକ ଜୀବନ

ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଅଧିନିଯାମର ଆକାଶକ ମୃତ୍ୟୁର ଜଣା  
ଯୋଟେଇ ଓଷଠ ଛିଲ ତା ତାର ବଢ଼ ମେଘ ବକୁଳ । ପୁତୁଲର ମତ ମିଛି  
ଛୋଟ ବୋତ ହାୟୁଗ ଦିକେ ଚେଷ୍ଟେ ବକୁଳ ବୁଝିଲ, ଶୋକେ ଅଭିଭୂତ ହବାର  
ମତ ଅବସର ତାର ନେଇ । ରାଗୁକେ ବୀଚିରେ ହାଥା, ମାତୁମ କରେ  
ତୋଳାର ଦାରିଦ୍ର ଏଥିତ ଶର୍ଷ ତାରଇ ।

ଶୁଦ୍ଧ ପ୍ରବାସେ କୋଥାର ତାରା ପାବେ ଏକଟ୍ଟ ଆଶ୍ରମ ଆଦ  
ଦୁଃଖୁଠା ତର୍ହୁ ? ବୋଧହର ପରମ କଳ୍ୟାନମରେ ତିର୍ଦେଶେଇ ଏହି  
ଦୁଃଖମଧ୍ୟେ ଦେଶ ଥେବେ କାକା ଏସେ ତାଦେର ତିଥେ ଗେଲେତ ନିଜେର  
ଆଶ୍ରମେ । କାକା ଓ କାକିମାର ରେହଶ୍ଵରେ ବକୁଳ ପେଲ ତଥ ଜୀବତେର  
ଶ୍ରେଣୀ । କିନ୍ତୁ ତିର୍ହୁର ଦାରିଦ୍ରେ ସଙ୍କାଳାପୋଷ କରାତେ ଚାଇଲା  
ତାର ମତ ।

କାକାର ତଥିରେ ଜେଲ୍-ହାକିମେର ମୁଣ୍ଡାରିଶ-ପତ୍ର ନିଷେ ବକୁଳ  
ଏଲ କୋଲକାତାର ମିସେସ ଧୋଷାଲେର ବାଡିତେ । ମିସେସ ଧୋଷାଲ  
ସମାଜେର ଏକଜତ ବିଶିଷ୍ଟ ଉତ୍ତାବଶାଲିତୀ ମହିଳା । ଯାମୀର ମୃତ୍ୟୁର ପର  
ତିତି, ଏକମାତ୍ର କତ୍ତା ମାଧ୍ୟମେ ଓ ବିଭିନ୍ନ ଶିଳ୍ପ ପ୍ରତିଷ୍ଠାନେର ଉତ୍ସତିର  
ଜନ୍ୟ ନିଜେର ଜୀବନ ଉତ୍ସର୍ଗ କରେହିଲେତ । ମିସେସ ଧୋଷାଲେର କୃପାତ,

कलेजे पड़वार ओ हष्टेले थाकवार सुव्वाग खेळ बहुल।  
बहुलेर जीवने होल तव-अक्षयादः।

हष्टेले एसे से एकदिनै सकल महेसुर आपतार करें तिल। किंतु विपन वाधल सूपारित्तेण्ठेट्, मिस् व्यावाजिके विरो। तिति साक्षात् मोहमुगर—एकेवारे मठालीट् अतिमूर्ति। कवार कवार तार तोतिर वाष-वर्षण। येवेठा ताके आद्यत करें डाके 'मिस् डिसिप्लिन' वले, अवश्य आडाले।

पड़ातवा, अधापता ओ राघुके तिरेइ सर्वज्ञत वाष थाके बहुल। आज से वाँचवार पव गूँजे (पेहेड़े)।

हृष्टां एकदिन टेलिफोते डाक एज बहुलेर। रिसिडार कावे दितेइ उत्तम तोत्र डॅस्मा। बहुल त विश्वरे अवाक। परेवे दिन आवार टेलिफोत—एवार तितकार तव, कमा आर्धता। तारपर रोजै टेलिफोत। बहुलेर वेश डाल जागत एই टेलिफोतेर बद्दुट्टके। मिस् डिसिप्लिनेर तोक्त सृष्टि पड़ल, तिति बहुलेर हात थेके हिलिके तिरे कावे दिलेत रिसिडार—उत्तलेर पुक्कवेत अर्थवर। बहुलके टेत्रे तिरे एलेर मिसेस

द्वेषालेर काहे, वज्ज्लेत अमक कथा वाडिरे वाडिरे मिसेस द्वेषालेर बहुलके कमा करते पारलेत मा—पुक्कव बहुल संगे टेलिफोते गम्प कराटा हष्टेलेर आईरेत दिक्केळे। बहुल श्वागूर मत तिश्चल। हासते हासते माधवी एकट्ट सोमाकांति शुवकर हात धरे बहुलेर काहे एसे वज्ज्ले—अशोक च्याटोजि, विलात केरें इत्तिहार। एंट्रै कवार माधवीर मा, सुव्वाहेत बहुल सञ्ज्ञूर्त तिदोर्म—तिति बहुलके कमा करतहेत। बहुल मुख तूले चाइल अशोकेर दिके—अशोक देखल तक्कडा सूर्ट काला चोर। बहुल मने मने डावल, जराहाये लूकिर थाकलेर मानुषेर माझे एक्तव उगवार वास कहेत।

जात्रे चोरे युम आसेता बहुलेर। जाताला दिहे देखे लोल आकाशे मेषेर खेला। मने हर, त्रुपकवार राजपुत्र एसेहे तार जीवामे—सोगार काठिर श्वर्षे एवार हवे तार शापमोहत।

दित चले थार...

पथेव वाँके एकदिन देखा सेइ राजपुत्रेर संगे!

राजपुत्र कार जरु वेत अपेक्षा करते गाढ़ि तिरे। आकाशे मेषेर घरघटा—दूचार टौटा जल ओ पड़ते। अशोक डाकल बहुलके, आकाशेर दिके चेते साडा दिल बहुल।

रोजै विकेले 'तादेर देखा हर' लोकालहेर वाईरे तिर्जिमे। निहृते वसे, पडे तारा 'शेवेर कविता', आर चूप करे भावे—

"तोमाले देखिला थवे ममे हर आर्त कम्पतार"

पूर्विवी पाहेव तोचे चुपि चुपि किल्हे मत्त्वा सरे थावे वले।"

शेवेर कविताऱ्य शेव पाताल एसे तारा अनुभव करल—'पव वेवे दिल बहुलीत शहि'।

डोहवेलास थवे पाधिरा डाकते तुक करते, दरजार वाहिले घट्टेट, शक। बहुल दरजा घुल देखे दीडिशे आहे माधवी। माधवी वज्ज्ले—"बहुल! आर एगिओता—अशोकेर संगे आमार विशे टिक हवे गेहे!" माधवी चले गेल। बहुल भावे, एकि यग्म? ता, विडोविका?

बहुल अशोकके पाश काठिशे चले! दरिह, अताथार पक्के वेशी आशा करा उचित तस्ह।



অশোকের বাবার নিঃ মুণ্ডিতে আসছে। মাথার  
আগে তিনি একবার বকুলকে দেখে যেতে চাই। অশোকের  
মাঝ মুদ্রার পর থেকে তিনি অশোক ভাড়া আর কিছু  
কাটেন না।

অশোক কোর করে ধরে তিনি এল বকুলকে, কখন  
বাবার কাছে। মুর্মু' বুক বকুলকে ডাকলের মা বলে—  
লাখপতি ডাকাতের বকুলকে মা বলে? আচ্ছসবেব করতে  
লাগল বকুল। যুতা পরোট পুরুষার বাবা নিঃ অশোকের  
বাবা আশীর্বাদ করলেন তারী পুরুষপুরুক। বকুল কান্দতে  
কান্দতে দুর্দের পা কঢ়িতে ধরল। তার মনে হোল—হার  
মুখি পুরিবী থেকে বেশি মূর্ত রহ!

বিশেষ পির ছিল হয়ে গেল। দেশ থেকে কাকা  
ও কাকিয়া এসেছের বকুলের বাসা-বাড়িতে। তাদের জারুরের  
মাঝ সীমা নেই।

বিশেষ বালার মেরে অশোক বকুলকে মাঝিতে দিয়ে  
গেল তার বাড়িতে। উপরে এসে বকুল দেখে, অন্ধকার মধ্যে  
চুপটি করে বাস করছে মাখী। ফোরে তার হিঁজে মুক্তি।

মাধবী আদেশ করল—“এ-বিহে ভেকে মাও বকুল”—

বকুল হাসতে হাসতে বলল—ঠাট্টা করছ?

—না। অশোকের হেলের সাড়া পাঞ্চি আবার শব্দোন।  
কাড়ল বেথে বেথিতে গেল মাধবী। পুরিবী মুলতে লাখল  
বকুলের চোখের সাম্যতে।

সে-রাতে অশোক এসে দেখে বকুলের বাড়ি বীকা।  
বকুল তিক্কেশ।

ঝুট্টে ঝুট্টে তিক্কের বাড়িতে বিহে এল অশোক।  
সে দেখল, তাঙ্গাদের সকল তিক্কের অবজ্ঞা করে তিক্কের  
হাতে বাড়ি সাজান্তের তার কখন বাবা। তিনি বলছেন, বিশ  
বছর পরে আবার এ-বাড়িতে লাখীর আগমন হবে। এমুশ  
সহ্য করতে পারল না অশোক। বাবার আগে তন্মু বলে  
গেল—এ বিহে হবে না। মুর্মু' দুর্দের চোখের সাম্যে  
হাঙ্গার বাতির আলো তিক্কে গেল। মাথা মুর্তে তিনি সিরি  
তিক্কে পড়িকে লাঢ়লেন।

কোথা থেকে কো হবে গেল? অশোকের মাথার কিছুই

মুক্ষে না। আজ কি করে সে মুখ তুলে মীড়ারে বাবার সাম্যে?

চোরের ঘর মুলি মুলি এল তার ইতিবিহারি বাবু—  
আচ্ছাদনের জাহেজে। ম্যামেকার কালৌদারু, এত হাতে  
অশোককে দেখে আবাক। কোর কথা বলার আবেদি টেলিফোনে  
জেসে এল, অশোকের বাবার মুড়ু-সংবাদ।

অশোক খাড়ি তিক্কে আবার মুট্টল। পৰের ঘোড়েই হোল  
ভোগ আশ্চর্যেটে। কালৌদারু এসে দেখেন—অশোক বাটবিহার,  
সাজানোনি।

.....কান্ধকান্ধের মুক তিক্কে ঝুট্টে চালেছে টের। মুসুর বাহুক  
মুক তিক্কে বকুল ভাবছে—এ চলার পথে কোথাই?



একটা মিষ্যাহ খণ্ডিয়াম যে বাটবারি শোকের হতে পারে,  
সে জাত মাখীর ছিল না। আজ সে তিক্কের মুখ মুর্তে পোরে।  
তাকে জাইশিত করতেই হবে। মাধবী পাখলের মত মুখে  
বেড়ান্তে—কোথাৰ অশোক? কোথাৰ বকুল?



ଗାନ

( ୧ )

ବିଶ୍ୱ ସାମାଜିକୀ ଶୋଇ  
ସବି ତବ ନାମ ହତ ହିତିଥା  
କିଂବା ଆଜି କମଦିଲା  
କବେ ହୃଦୟ ଛିଲ ନା କୋଣ !

ବିଶ୍ୱ ସାମାଜିକୀ ଶୋଇ  
ଉପାର ନାହିଁ ଯେ ଡାଇତୋ ଡୋବାର  
ଦେଖାଇ ଗହ୍ୟ କରି ।

ସବି ସବି ସବି ଆହା ସବି  
ଦେମ ଲାକ୍ଷ୍ମୀ ଭାବା କାଟି ପାଇ  
ଅଳକଳ ମିଳ ଏଥେ ନାମେ ଆର କଲେ  
ତୁଳନା ନାହିଁ ଯେ ତାର

ଦେଖାନୀ ଶ୍ରକ୍ଷମି ତୋହାର  
ପରିହାଳ ଦୋଷା ଭାବ ।

ଶୁଲିଷ୍ଠ ନାମ ଲଲିତ ଅଟେ ସ୍ଵର ରଙ୍ଗେ  
ଲାଖନି ପଡ଼ିଛେ କବି  
ସବି ସବି ସବି ଆହା ସବି ।

( ୨ )

ୟେ କଣ୍ଠକୁ ହୋଇ ଗେଇ ଚିରକାଳ  
ଯାର ଯାବେ ବବେ ତଥୁ ଏହିତି ହୃଦୟ  
ଆର କିନ୍ତୁ ନର ॥

ୟେ କଣ୍ଠକୁ ଆର ଏହି ଆଲାପନ

ତାରଇ ଯାଏ ତୁଳନାର ଯନ  
କାମେ କାମେ କାତ କଥା କଥ ।

ମର କୁଳ ନର ପାଦୀ ନଗଗୋ ଟାବେରେ  
ଏହି କଣ୍ଠକୁ ଶୁଣ ତୋହାର ଆହାର  
ଗଗୋ ତଥୁ ଆଯାଦେବ ।

ୟେ କଣ୍ଠକୁ ଆର ଏହି ଯେ ଆବେଶ  
କୋମ ଦିନଇ ନାହିଁ ତାର ଶେଷ  
ଲେ ଯେମ ଏ ଜୀବମେହି ଘର ॥

( ୩ )

କି ଜାନି କି କଥା ବଲେ ଦେଖାନୀ ଦବିନା  
ଆକାଶେ ତାରାତେ ବାଟେର ଦେଖାନୀ  
ଅଳେ,  
କୋମ ମେ ଶୁବେ କାର ମେ ଶୁବେ  
କୋମ ଆଜାନାର ଯାଇ,  
ଏହି ଯେ ଆଯାର ଆଜକେ ଆଯାର  
ହାହଗୋ କୋଖାର ଯନ ଯେ ହାହାର



ତାକ କେ ପାଠାର ଲେ ତ ଜାନିନା ॥

ହାରିଯେ ସାଓରିର ଅନୁମାଗେ  
ହାରିଯେ ଯେତେଇ ତାଳ ଲାପେ  
ଯାହାରୀ ସ୍ଵର୍ଗରେ ଯେ ଖେଳ ଚଲେ  
ବାତେର ଲିଖିରେ ଲେ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶୁକୃତା ଘଲେ,  
ଆଜ ଏ ବୁକେ ନିବିଡ ଶୁରେ  
କିମେର ନାଢା ଲାଇ

କୋନ ଲେ ଗୋପନ ଆଗାର ଅପନ  
ତାର ଲେ ଏଥନ ତାର ଜୀବନ  
ଶୌଭାର ବୌଧନ ତାଇତ ଜାନିନା ।

( ୪ )

କେବନ ଯଜା କେବନ ଯଜା କେବନ ଯଜା  
ଓ ହିମ ସାମାଜିକୀ  
କୋଥାର ରଇଲେ ତୋହାର ଜାବିଲୁରି  
ରଇଲେ ଗୋ  
ଆଜ ବନ୍ଦ କାରାର ଅଛକାରେ  
ଶୁଜି ଲାବାର ଦବିନ ବାତାଳ ବାଇଲ ଗୋ ॥

ଆଯାଦେବ ବକୁଳ ଯାଳା  
ତାର ସ୍ଵର ଗଲାର ଟାଇ ପେବେଗେ  
ତୋହାରେ ଦିଲ ଯେ ଆଜ ପରାଜହେର  
ଦାଳଳ ଯାଳା

ଲେ ତୋରା ଲେ ଉତ୍ସ  
କାଜଳ ପ୍ରାନ ଓ ହୃଦୀ ନରମ ଅପନେ  
ସେ ଚଲୁଛୁ  
କାନାଢା ହୌଲେ କବନୀ ବନ୍ଦ ଆର

ବୈବେ ଲି ବକୁଳ କୁଳେ  
ଶୁଲକୁଶଳ ଦିବରେ ଦୁଲାରେ ଦୁଇ ଶୁଳକ  
କରିବୁଲେ  
କଷଳ କୋମଳ ଏହି ଶୁଳି ହାତେ କଷଳ  
ଦେବ ପରାହେ

ଏହି ଯାଳା ତୋର ସ୍ଵର ପଦାନ ଅପନେ  
ଦେବେ ଯେ ଭବାରେ  
ଶେତ ଚଲନେ ପାତ ଲେଖାନୀ ଏକେ  
ଲାଲ ଚୋରାଳେ ପରବେ ବାତାଳ  
ଓ ଆମନ ଦେବ ଚେକେ  
ଦେଖୋ ନରମ୍ଭୁ ।



# প্রডিউসাস' ইউনিয়নের বিবেদন

প্রতিভা বন্ধুর

## মাধবীর জন্ম

পরিচালনা: নৌতৌল বন্ধু

সংগঠকারী

প্রযোজন— পি, এন, রায়

চিত্রনাট্য— বনোজ ডটাচার্য

শিরনির্দেশক— সৌরেন সেন

মুৰ-শিল্পী— অনুপম ঘটক

আবহ-সঙ্গীত— তি, বালসারা

আলোক-চিত্র— বিমল মুখাজি

শব্দ নির্যন্ত্রণ— বাণী সত্ত

গীত রচনা— গৌরী প্রসৱ মজুমদার

সম্পাদনা— কালী রাহা

ব্যবস্থাপক— মুবোধ দাস

ক্রপ-সঞ্জ্ঞা— প্রাণানন্দ গোস্বামী

আলোক-সম্পাদক— হরেন গান্ধুলী

পরি-চিত্র— ক্যাপ্স।

সহকারীবুল্ড—

পরিচালনা— বাসী বন্ধু, মুনীর ঘোষ, ও

প্রফুল্ল ভোগ

আলোক-চিত্র— দীপক দাস, কানাই দে

শব্দ-নির্যন্ত্রণ— শিখি ব্যানাজি

ব্যবস্থাপক— মনি দাসগুপ্ত, আনন্দ ঘোষ

শির-নির্দেশ— গোপী সেন

সঙ্গীত— হীরেন ঘোষ

সম্পাদনা— তরুণ দত্ত, প্রশান্ত দে

ক্রপ-সঞ্জ্ঞা— ডীম নকুল, বৈদ্যনাথ শৰ্মা

আলোক সম্পাদক— গণেশ, মুদীর, অভিযন্তা,

হৃবী, অবনী।

আর, সি, এ, শক্তিশ্রেষ্ঠ কালকাটা মুভিটোন ট্রাইওয়ে

গৃহীত।

বিজ্ঞ রাধের তত্ত্বাবধানে কিছি সার্ভিসেস ল্যাবরেটরীতে

পরিষ্কৃত।

একমাত্র পরিবেশক—

অরোরা ফিল্ম কর্পোরেশন ( প্রাইভেট ) লিমিটেড।

শিশু রঞ্জন ও অরোরার

যুগ্ম প্রযোজনার

## অবন পটুয়া

অরোরা পরিবেশনা

—গঠন পথে—

ভূমিকালিপি

আশীর্ব কুমার, ছবি বিশ্বাস, জহর গান্ধুলী, তুলসী লাহিড়ী

কালী সরকার, প্রতি মজুমদার, শৈলেন মুখাজি, ছবি দোষাল, শিখি

ব্যানাজি, ঝীবন ঘোষ, দিলীপ দাস। সাবিত্রী চ্যাটাজি, প্রথম

ঘোষ, চতুর্বৰ্তী দেবী, তপতী ঘোষ, পঞ্চা দেবী, মুসালা চ্যাটাজি,

আরতি দাস, হিমেন লাহিড়ী, অঙ্গলি চতুর্বৰ্তী, লক্ষ্মী, বাসন্তী, মায়া,

জয়ঞ্জী, সরোবরী, বার্মু ও আরো অনেকে।

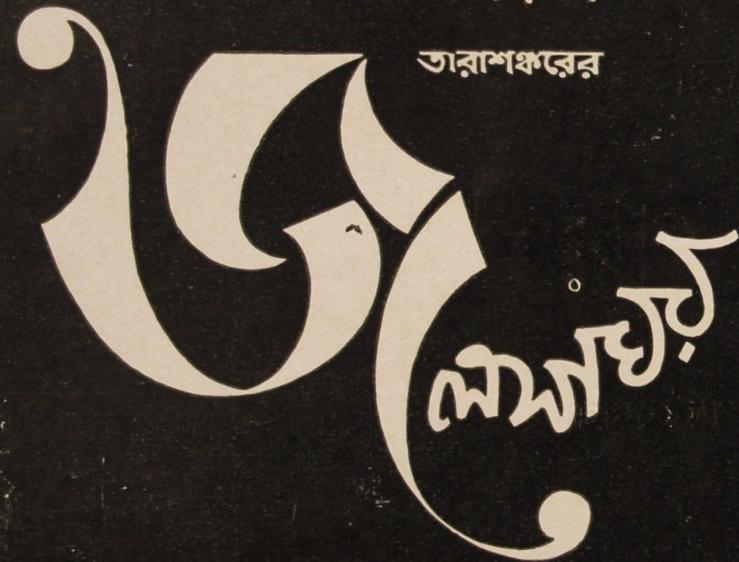
মুক্তি সংগ্ৰহ -

এন্ড বি, কিলাম ইণ্টার্ন্যাশনাল প্ৰক্ষিপ্ত | ক'লস রিলিজ

অৱোডাৱ নিবেদন

সত্যজিৎ রায় পরিচালিত

তাৰাশঞ্চলেৱ



|| অৱোডা পৰিবেশিত ||

মহাজ্ঞাতি আচ' প্ৰেম, কালকাতা-২৫

পৰশ্চৱাম বিৱিতা  
সত্যজিৎ রায় পরিচালিত  
কুমুৰীচক্ৰবৰ্তী অভিযোগ

মুক্তি সংগ্ৰহ  
পৰশ্চৱাম  
পৰশ্চৱাম



তাৰাশঞ্চল

পৰিচালনা: অস্ত্ৰিক ঘটক  
কলাম: কালী বন্দোপাধ্যায় ও "জগদল"